इकाई चार

औद्योगिक क्रान्ति और उसका प्रभाव

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 औद्योगिक क्रान्ति से अभिप्राय और प्रमुख परिवर्तन

4.4 पृष्ठभूमि–चार अन्य क्रान्तियां

4.4.1 कृषि क्रान्ति

4.4.2 जनांकिकीय क्रान्ति

4.4.3 व्यवसायिक क्रान्ति

4.4.4 परिवहन क्रान्ति

4.5 इंग्लैण्ड में प्रारम्भ होने के कारण

4.6 नवीन अविष्कार

4.6.1 वस्त्र उद्योग

4.6.2 वाष्प शक्ति

4.6.3 लोहा और कोयला उद्योग

4.6.4 यातायात और परिवहन में तकनीकी प्रयोग

4.6.5 संचार साधनों का विकास

4.7 विकास और प्रसार

4.8 औद्योगिक क्रान्ति का प्रभाव और परिणाम

4.9 सारांश

4.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.11 तकनीकी शब्दावली और कथन

4.12 संदर्भ ग्रंथ सूची

4.13 सहायक और उपयोगी पाठ्य सामग्री

4.14 निबंधात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

आधुनिक युग के प्रारम्भ से ही औपनिवेशिक साम्राज्यों की स्थापना, वैज्ञानिक प्रगति, वाणिज्यवाद और प्रारम्भिक पूंजीवाद के उदय के रूप में यूरोप की आर्थिक स्थिति में धीरे–धीरे बदलाव आ रहा था। 18वीं सदी तक आते आते यह बदलाव उत्पादन की तकनीक और स्वरूप में दिखाई देने लगा तथा इसने एक ऐसी अर्थव्यवस्था को जन्म दिया, जो कृषि पर आधारित न हो कर उद्योग प्रधान थी और जिससे हस्त एवं

इकाई दो

फ्रांस की क्रान्ति तथा नेपोलियन का युग

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 फ्रांस की क्रान्ति (1789) कारण

2.3.1 सामाजिक कारण

2.3.2 राजनैतिक कारण

2.3.3 आर्थिक कारण

2.3.4 बौद्धिक और अन्य कारण

2.3.5 तात्कालिक कारण

2.4 फ्रांस की क्रान्ति (1789) प्रमुख घटनायें

2.4.1 स्टेटस जनरल का अधिवेशन

2.4.2 बास्तील का पतन और जनता का विद्रोह

2.4.3 राष्ट्रीय संवैधानिक सभा

2.4.4 व्यवस्थापिका सभा

2.4.5 राष्ट्रीय सम्मेलन (नेशनल कन्वेंशन)

2.4.6 निदेशक मण्डल (डायरेक्टरी)

2.5 नेपोलियन का उदय

2.5.1 प्रारम्भिक जीवन

2.5.2 प्रारम्भिक सैनिक उपलब्धियां

2.5.3 1799 का संविधान

2.6 प्रथम कौंसिल के आन्तरिक सुधार

2.6.1 प्रशासनिक सुधार

2.6.2 पोप से समझौता

2.6.3 कानूनी सुधार

2.6.4 शिक्षा में सुधार

2.6.5 आर्थिक सुधार

2.6.6 सांस्कृतिक और सामान्य हित के कार्य

2.7 प्रथम कौंसिल कालीन विदेश नीति

2.7.1 आस्ट्रिया से युद्ध

2.7.2 द्वितीय गुट का अन्त

2.7.3 इंग्लैण्ड से सम्बन्ध

2.7.4 औपनिवेशिक राज्य

2.8 सम्राट के रूप में नेपोलियन

2.8.1 इंग्लैण्ड से युद्ध

2.8.2 आस्ट्रिया पर आक्रमण

2.8.3 मध्य यूरोप का पुनर्गठन

2.8.4 प्रशा की पराजय

2.8.5 रूस से सम्बन्ध

2.9 नेपोलियन के पतन में सहायक घटनायें

2.9.1 महाद्वीपीय युद्ध

2.9.2 प्रायद्वीपीय युद्ध

2.9.3 आस्ट्रिया से पुनः युद्ध

2.9.4 रूसी अभियान

2.9.5 प्रशा में जागृति

2.9.6 राष्ट्रों से युद्ध

2.9.7 नेपोलियन का अन्तिम युद्ध

2.9.8 नेपोलियन की भूलें और चारित्रिक दोष

2.10 मूल्यांकन

2.10.1 फ्रांस की क्रान्ति के परिणाम और प्रभाव

2.10. 2 नेपोलियन युग का महत्व

2.11 सारांश

2.12 तकनीकी शब्दावली और कथन

2.13 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

2.14 संदर्भग्रंथ सूची

2.15 सहायक और उपयोगी पाठ्य सामग्री

2.16 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध की जिन घटनाओं ने उन्नीसवीं सदी को एक दिशा प्रदान की, उनमें सर्वाधिक प्रमुख घटना फ्रांस की 1789 की क्रांति थी। इसने यूरोप में राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तनों का दौर शुरू किया। इस क्रांति द्वारा फ्रांस में पुरातन व्यवस्था को समाप्त कर नागरिक अधिकारों और बौद्धिक सिद्धान्तों पर आधारित व्यवस्था स्थापित की गयी। फ्रांस की क्रांतिजनित स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व के नारे ने सम्पूर्ण यूरोप को पुरातन व्यवस्था के विरूद्ध आंदोलित किया। अगले सौ वर्षों तक यूरोप में होने वाली प्रमुख घटनाओं को यह क्रांति प्रभावित करती रही।

फ्रांस में क्रांति के पश्चात पुरातन व्यवस्था के अन्त और नवीन शासन व्यवस्था के विभिन्न असफल प्रयोगों के पश्चात अन्ततः फ्रांस की बागडोर नेपोलियन बोनापार्ट ने संभाली। उसने जिस तीव्रता से फ्रांस को यूरोप की शक्ति और महिमा का केन्द्र बनाया, वह उसे महान व्यक्तियों की श्रेणी में स्थापित करने के लिए पर्याप्त था। 1815 तक न केवल फ्रांस वरन् यूरोप के घटनाक्रम भी नेपोलियन के कार्यों से प्रभावित रहे। फ्रांस की क्रांति के सिद्धान्तों का यूरोप के अन्य देशों में प्रसार उसकी विजयों के माध्यम से हुआ । इतिहास में उसका कार्यकाल (1799 से 1815) नेपोलियन युग के नाम से जाना जाता है।

2.2 उद्देश्य

इस ईकाई में आप जान सकेंगे –

- फ्रांस की क्रांति के प्रमुख कारण और फ्रांस की क्रांति के दौरान घटित विभिन्न घटनाक्रम।
- नेपोलियन बोनापार्ट के सम्पूर्ण जीवन और कृत्यों का अध्ययन।
- नेपोलियन के युद्धों के माध्यम से फ्रांस की क्रान्ति और राष्ट्रीयता के विचारों के यूरोप के अन्य देशों में प्रसार और प्रभाव।